IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों के दायित्व–बोध का तुलनात्मक अध्ययन।

1–शोधार्थी

कुलदीप किशोर, शिक्षा विभाग,स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, डोईवाला, देहरादून उत्तराखण्ड,(भारत)

2–शोध निर्देशक

Dr. Daljeet Kaur, Prof.Emeritus, (Principal.retd)

सारांशः–

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दायित्व–बोध का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधकार्य हेतु किया गया हैं। उपकरण के रूप में शिक्षक दायित्व बोध प्रश्नावली का प्रयोग किया गया हैं। न्यायदर्श के रूप में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कुल 60 शिक्षकों (30 पुरूष एवं 30 महिला) को यादृच्छिक पद्वति द्वारा चयनित किया गया हैं।निष्कर्ष के रूप में पाया गया है कि महिला शिक्षको की अपेक्षा पुरूष शिक्षको का दायित्व बोध उच्च पाया गया।

मुख्य–शब्द–राजकीय माध्यमिक विद्यालय, पुरूष एवं महिला शिक्षक।

1.प्रस्तावनाः–

शिक्षा ही वह ज्योतिपुजं हैं जो मानव मस्तिष्क के ज्ञान रूपी प्रकाश को अलोकित करती हैं।शिक्षा समाज का आधार मानी जाती हैं,तथा शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता हैं।

जॉन डी.वी. ने ठीक ही कहा है कि जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिये भोजन की आवश्यकता उसी प्रकार समाज के विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती हैं।

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार हैं और समाज के निमार्ण में शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। आज की शिक्षा बाल केन्द्रित हैं, और बालको का सर्वागीण विकास शिक्षक को करना हैं। शिक्षा किसी भी समाज की नीव होती हैं, और इस प्रकिया में शिक्षको की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको का दायित्व बोध विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है क्योकि वे किशोरावस्था में प्रवेश कर रहें छात्रों के विकास में एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इस स्तर पर शिक्षक न केवल शैक्षिक ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि छात्रों के नैतिक, सामाजिक, और भावात्मक विकास में भी सहायक होता हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व विकास, ज्ञान के प्रसार और नैतिक मूल्यो की स्थापना में अहम भूमिका निभाते हैं।इस सन्दर्भ में शिक्षको का दायित्व बोध **(Sense of Responsibility)** अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता हैं। उनके कार्यो की प्रभावशीलता और उनके दृष्टिकोण का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता हैं। विशेष रूप से उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक छात्रों के शैक्षणिक,

मानसिक, सामाजिक और भावात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। **माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है।** उच्चतर माध्यमिक स्तर एक ऐसा चरण हैं, जहॉ से छात्रों का ब्यक्तित्व निर्माण और भविष्य की दिशा तय होती हैं।

2.अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः–

आज केबदलते सामाजिक, सास्कृतिक और शैक्षिक परिपेक्ष्य में शिक्षको के दायित्व बोध का महत्व और भी बढ गया हैं। **वर्तमान समय में शिक्षा एक बहु आयामी एवं बहुमुखी प्रक्रिया है। बालक का सर्वागीण विकास एवं चहुमुखी विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना गया है जोकि बौद्धिक ज्ञान एवं व्यावहारिक अनुभव के माध्यमसे ही प्राप्त किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में आज शिक्षकों का दायित्व बहुत बढ़गयाहैं।** शिक्षा में हो रहे निरन्तर परिवर्तन और नयी नीतियों के चलते शिक्षको को उनके दायित्वों के प्रति अधिक सजग और संवेदनशील होने की आवश्यकता हैं।कई बार देखा गया हैं कि शिक्षकों में अपने कार्य के प्रति उदासीनता असंतोष देखने को मिलता हैं, जो विद्यार्थियों की प्रगति के लिए बाधक साबित होता हैं। **क्योंकि माध्यमिक स्तर की शिक्षा आर्थिक विकास तथा सामाजिक न्याय की स्थापना को सुविधाजनक बनाती** है।समाज में लगातार बदलते परिवेश, तकनीकी विकास, और शिक्षण की बदलती प्रवृतियों ने शिक्षक की भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण बना दी हैं। एसे में शिक्षको के दायित्व बोध का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता हैं, ताकि यह समझा जा सके कि वे अपनी भूमिका को किस प्रकार समझते हैं, और इसे निभाने में क्या कठिनाई आ रही हैं।शिक्षको के दायित्व बोध का अध्ययन यह जानने का प्रयास करता हैं कि वे अपने कार्यो, शिक्षण की विधियों और छात्रों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को किस तरह से निभाते हैं।

यह अध्ययन शिक्षको के दायित्व बोध को बेहत्तर ढंग से समझने में सहायक होगा और इसे सुधारने के लिये संभावित नीतिगत सुझाव प्रदान करेगा।इससे न केवल शिक्षको की कार्य क्षमता बढेगी,बल्कि विद्यार्थियों के शैक्षिक और नैतिक विकास में भी बृद्धि होगी।

अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के दायित्व बोध का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण और समयानुकूल प्रयास हैं, जो न केवल शिक्षकों की पेशेवर दक्षताओं को निखारने में सहायक होगा, बल्कि शिक्षा ब्यवस्था को और अधिक प्रभावी और सुदृढ बनाएगा।

3.समस्या कथनः–

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष व महिला शिक्षकों के दायित्व बोध का तुलनात्मक अध्ययन।

दायित्व–बोधः–

- दायित्व–बोध से तात्पर्य हैं कि शिक्षक अपने कार्यों ,भूमिकाओं, और समाज के प्रति, अपने जिम्मेदारियों के प्रति कितने जागरूक हैं।
- स्वामी बी.के. के अनुसार– शिक्षको के दायित्व–बोध अपने छात्रो के प्रति समर्पित भावना हैं, जिसमें अपने कार्य में तन्मयता और संगठन के मूल्यों में निष्ठा विश्वास निहित हैं।
- दायित्व–बोध का तात्पर्य शिक्षको द्वारा अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्व को समझने, स्वीकार करने और उन्हें निभाने से हैं।यह बोध शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और विद्यार्थियों के प्रति उनकी निष्ठा को निर्धारित करता हैं।एक उत्तरदायी शिक्षक न केवल अपने बिषय में निपुण होता हैं, बल्कि वह छात्रों की आवश्यकताओं, उनके शैक्षिक और नैतिक विकास की भी चिन्ता करता हैं।

4.उद्देश्यः–

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य हेतु राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत–

1. पुरूष एवं महिला शिक्षकों में दायित्व–बोध के स्तर का पता लगाना या अध्ययन करना।
2. पुरूष एवं महिला शिक्षकों में दायित्व–बोध स्तर की तुलना करना।

5.परिकल्पनाएँः–

1.पुरूष एवं महिला दायित्व बोध सामान्य स्तर का हैं।

2.पुरूष एवं महिला शिक्षकों में दायित्व–बोध के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

6.शोध अध्ययन विधिः–

प्रस्तुत शोधकार्य में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष/महिला शिक्षकों के दायित्व–बोध के विद्यमान स्तर का अध्ययन करना था,तदैव,वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध–विधि प्रयुक्त की गयी हैं।

7.जनसंख्याः–

प्रस्तुत शोध–अध्ययन की जनसंख्या देहरादून नगर में स्थित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

8.न्यायदर्शः–

देहरादून नगर में स्थित दो राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक पद्वति से किया गया, जिसमें से एक बालको तथा दूसरा बालिकाओं का विद्यालय हैं। इन विद्यालयों से **30**पुरूष एवं 30महिला शिक्षको को न्यायदर्श में सम्मिलित किया गया। तथा उन्हीं शिक्षकों को चयनित किया गया जो विगत दो वर्षो से स्थाई रूप में इन विद्यालयों में कार्यरत हैं।

9.शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

शिक्षक दायित्व–बोध का आकलन करने के लिए 24 प्रश्नो की प्रश्नावली स्वनिर्मित की गयी हैं जिसमें प्रत्येक प्रश्न के सदैव/प्रायः /कभीनही, के रूप में उत्तर देने हैं, जिन्हें कमश 3,2,1 अंक दिये गये है।

10.आकडों का साख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचनाः–

संग्रहीत आकडों को सारणीवद्व किया गया तथा मध्यमान, मानक–विचलन, व टी–मान साख्यकीय का प्रयोग किया गया। तदनुसार परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

- परिकल्पना कमाक–(1)का परीक्षण–

पुरूष एवं महिला शिक्षको के शिक्षक दायित्व–बोध का स्तर एक हो जाता हैं। इसकी जॉच के लिए मध्यमान व मानक–विचलन के निम्न अंक प्राप्त हुए–

➢ इसके लिए निम्न सारणी विकसित की गयी हैं–

- सारणी क्रमाक–(1)

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
पुरूष शिक्षक	30	64.59	5.40
महिला शिक्षक	30	62.67	4.66

पुरूष शिक्षको का महिला शिक्षको की अपेक्षा मध्यमान अधिक हैं, जो यह दर्शाता हैं कि महिला शिक्षको के सापेक्ष पुरूष शिक्षको में अपने दायित्व–बोध के प्रति अधिक जागरूकता हैं। इससे परिकल्पना क्रमाकं (1) अस्वीकृत हो गयी ।

- परिकल्पना क्रमाक–(2) का परीक्षण–

पुरूष एवं महिला शिक्षकों में शिक्षक दायित्व की भावना के स्तरों में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

➢ इसके लिए निम्न सारणी विकसित की गयी हैं–

- सारणी क्रमाक–(2)

पुरूष एवं महिला शिक्षको के शिक्षक दायित्व–बोध की भावना के स्तरों की मध्यमान, मानक–विचलन व टी–मान के पदों में तुलनात्मक विवरण–

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक स्तर
पुरूष शिक्षक	30	44.59	5.40	1.15	0.15
महिला शिक्षक	30	62.67	4.66		

$df=(N_1-1)+(N_2-2)$
$=(30-1)+(30-2)$
$=29+29$
$=58$ पर 0.05 स्तर पर सार्थक **t**–मान. =2.00
0.01 पर सार्थक **t**–मान=3.40

उपरोक्त सारणी से विदित होता हैं कि–

- पुरूष शिक्षको का महिला शिक्षको के सापेक्ष दायित्व–बोध की भावना स्तर का मध्यमान अधिक हैं।
- किन्तु दोनो मध्यमान के मध्य अन्तर की सार्थकता स्तर जानने हेतु टी–मान 1.15 पाया गया जिसका स्तर 0.15 हैं। अर्थात 85% तक ही पुरूष व महिला शिक्षको के दायित्व–बोध में अन्तर विद्यामान हैं लेकिन सार्थकता की दृष्टि से 0.05 स्तर पर सारणीकृत मान 2.00 से कम प्राप्त हुआ हैं **(t=1.15 < 2.00)** जो यह दर्शाता हैं कि पुरूष व महिला शिक्षको के दायित्व–बोध में अन्तर 95% तक नहीं हैं।

तदैव, परिकल्पना कमाक (2)_अस्वीकृत_न होकर स्वीकृत की जा रही हैं।

सम्भवतः इसके पीछे यह कारण हो सकता हैं कि पुरूषों की अपेक्षा महिला शिक्षको के शिक्षक होने के दायित्व के साथ ही अन्य अनेक दायित्व होते हैं जिन्हें निभाना पडता हैं।

11.निष्कर्षः–

उपरोक्त शोध अध्ययन से निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–

1.सामान्यतः महिला शिक्षको के सापेक्ष पुरूष शिक्षको में दायित्व–बोध की भावना का स्तर अधिक होता हैं।

2.किन्तु यह स्थिति 85% तक ही पुरूष व महिला शिक्षको के मध्य विद्यमान रहती हैं और 95% तक पुरूष व महिला शिक्षकों के शिक्षक दायित्व की भावना स्तर में अन्तर नहीं मिल पाता हैं।

- उपरोक्त शोध अध्ययन परिणाम के शैक्षिक निहितार्थः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम से विदित होता हैं कि महिला शिक्षकों को इसके अवसर अधिक दियें जाए, जहॉ वे शिक्षक, दायित्वों का भरसक सही तरह से निभा सकें।जिससे कि विद्यालय के पुरूष व महिला दोनो प्रकार के शिक्षकों में शिक्षक दायित्व के प्रति सटीक भावना का निर्माण हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.अध्यापक साथी (जुलाई 2005) :'स्कूल छात्रों में सास्कृतिक मूल्यों की शिक्षा' राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद वाल्यूम–1 पृं.सं.32।

2.आचार्य पण्डित श्री राम शर्मा(1998): "अखण्ड ज्योति सस्थाँन मथुरा" अक–5 मई, पृं.सं.13.14।

3.अध्यापक साथी (जुलाई 2002): "जीवन मूल्य – परक खेलों से जुडे मेरे अनुभव " राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद वाल्यूम–2 पृं.सं.31।

4.अणुव्रत (अगस्त 2004):: "मूल्य संकट" अणुव्रत महासमिति, 2010 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,नई दिल्ली–2,पृं.सं. 18।

5.गुप्ता.एस0पी0:(2013)::साख्यिकीय विधियॉ, शारदा प्रकाशन इलाहाबाद।

6.सिंह अरूण कुमार::(2013).अनुसंधान की विधियॉ, शारदा प्रकाशन इलाहाबाद।

7.**Dhull. And Mangal.s.(2005)- Emotional intelligence its significance for school teacher efficacy.**

EDUTRACKS (HYDRABAD), JULY(2005).।

8.Sarangi,s and Kumari,P(2007)- Quality assurance through positional development of teacher.

EDUTRACKS(HYDRABAD), November 2007, page-11-13.।